International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 6, June 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

निपटान पैटर्न के प्रकार एवं दक्षिण हरियाणा के निपटान पैटर्न की प्रमुख समस्याओं का अध्ययन

सुनीता[1], डॉ. कालूराम[2]

भूगोल विभाग

[1,2]ओपीजेएस विश्वविद्यालय, चुरू (राजस्थान) –भारत

सार

हरियाणा देश का एक समृद्ध राज्य है। हरियाणा की गिनती देश के अग्रणीय राज्यों में की जाती है। दक्षिण हरियाणा, हरियाणा के दक्षिण में स्थित भू–भाग है। इस क्षेत्र के अधिकतर भाग एनसीआर में है। एनसीआर में होने के कारण इस स्थान ने अन्य हरियाणा के अन्य राज्यों की तुलना में अधिक उन्नति की है। गुरूग्राम जैसा वाणिज्य केंद्र न केवल इस क्षेत्र अपितु समुचित एनसीआर के लिए रोजगार का प्रमुख केंद्र बन चुका है। रोगजार की उपलब्धता होने कारण विगत कुछ वर्षो में इस क्षेत्र में जनसंख्या में बहुत तेजी से बड़ा है। इस क्षेत्र में निवास करने वाली ग्रामीण तथा शहरी जनसंख्या के समक्ष मूलभूत सुविधाओं की कमी उत्पन्न हो गयी है। कई क्षेत्रों में मलिन बस्तियों का संख्या में वृद्धि हो गयी है। ग्रामीण जनसंख्या का पलायन भी शहरों की तरह हुआ है। गुरूग्राम तथा उसके आस–पास के क्षेत्र के विकास के लिए कृषि योग्य भूमि व्यावसायिक भूमि में परिवर्तित कर दिया गया है। कृषि योग्य भूमि में कमी आने के कारण किसानों के समक्ष रोजगार की समस्या उत्पन्न हो गयी है।

कुंजी शब्द : हरियाणा, दक्षिण हरियाणा, दक्षिण हरियाणा ने जनसंख्या का दबाव, बस्तियों के प्रकार, बस्तियों के समक्ष उत्पन्न समस्याएं।

भूमिका

हरियाणा उत्तर भारत का एक राज्य है जिसकी राजधानी चण्डीगढ़ है। इसकी सीमायें उत्तर में हिमाचल प्रदेश, दक्षिण एवं पश्चिम में राजस्थान से जुड़ी हुई हैं। यमुना नदी इसके उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश राज्यों के साथ पूर्वी सीमा को परिभाषित करती है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली हरियाणा से तीन ओर से घिरी हुई है और फलस्वरूप हरियाणा का दक्षिणी क्षेत्र नियोजित विकास के उद्देश्य से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में शामिल है।

भारतीय गणतन्त्र में, एक अलग राज्य के रूप में, हरियाणा की स्थापना यद्यपि 1 नवम्बर, 1966 को हुई, किन्तु एक विशिष्ट ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक इकाई के रूप में हरियाणा का अस्तित्व प्राचीन काल से मान्य रहा है। यह राज्य आदिकाल से ही भारतीय संस्कृति और सभ्यता की धुरी रहा है। मनु के अनुसार इस प्रदेश का अस्तित्व देवताओं से हुआ था, इसलिए इसे 'ब्रह्मवर्त' का नाम दिया गया था।

शब्द हरियाणा का अर्थ "भगवान का निवास" होता है जो संस्कृत शब्द हरि (हिन्दू देवता विष्णु) और अयण (निवास) से मिलकर बना है। यह राज्य वैदिक सभ्यता और सिंधु घाटी सभ्यता का मुख्य निवास स्थान है। इस क्षेत्र में विभिन्न निर्णायक लड़ाइयाँ भी हुई हैं जिसमें भारत का अधिकत्तर इतिहास समाहित है। इसमें महाभारत का महाकाव्य युद्ध भी शामिल है। हिन्दू मतों के अनुसार महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में हुआ (इसमें भगवान कृष्ण ने भागवत गीता का वादन किया)। शास्त्र–वेत्तओं, पुराण–रचयिताओं एवं विचारकों ने लम्बे समय तक इस ब्रह्मर्षि प्रदेश की मनोरम गोद में बैठकर ज्ञान का प्रसार अनेक धर्म–ग्रन्थ लिखकर किया। उन्होने सदा मां सरस्वती और पावन ब्रह्मवर्त का गुणगान अपनी रचनाओं में किया।

दक्षिण हरियाणा

दक्षिण हरियाणा मेंगुरूग्राम, महेंद्रगढ़, पलवल और रेवाड़ी जिला शामिल हैं। दक्षिण हरियाणा के जिले आधुनिक बुनियादी सुविधाओं से सुसज्जित है। यहां वाणिज्य, संचार, संपर्क, परिवहन, चिकित्सा सुविधाओं हरियाणा के अन्य जिलों की तुलना में कहीं बेहतर हैं। इतिहास और पुरातत्व की दृष्टि से भी दक्षिण हरियाणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक सभ्यताएँ प्रारंभिक काल से ही फली–फूलीं।

दक्षिण हरियाणा की जनसंख्या

महाभारत काल में महाराजा युधिष्ठर द्वारा गुडगांव गांव को अपने धर्मगुरू द्रोणाचार्य को उपहार स्वरूप दिया गया था। जिसके इसी पौराणिक गुडगांव गांव के पास गुडगांव नगर की स्थापना हुई। यह दिल्ली से 32 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम दिशा में है।2011 के अनुसार जिला गुरुग्राम की जनगणना कुल जनसंख्या 1514085 है। जिसमें से 817274 पुरूष व 696811 स्त्रियां थी। इस प्रकार 2001 से 2011 में 73.93 प्रतिशत दशकीय वृद्धि हुई जबकि 1991 से 2001 तक की अवधि में 44.64 की दशकीय वृद्धि हुई थी।

कानौड़िया ब्राहम्णों द्वारा आबाद किए जाने कि वजह से महेंन्द्रगढ शहर पहले कानौड के नाम से जाना जाता था। ऐसा माना जाता है कि इसे बाबर के एक सेवक मलिक महदूद खान ने बसाया था।2011 की जनगणना के अनुसार महेंद्रगढ़ जिले की जनसंख्या 921,680 है। जिले का जनसंख्या घनत्व 485 निवासियों प्रति वर्ग किलोमीटर (1,260 / वर्ग मील) है। 2001–2011 के दशक में इसकी जनसंख्या वृद्धि दर 13.43 प्रतिशत थी। महेंद्रगढ़ में हर 1000 पुरुषों पर 778 महिलाओं का लिंग अनुपात है, और साक्षरता दर 78.9 प्रतिशत है।

सिटी पलवल का नाम 'पालससुरु' नामक दानव पर रखा गया है। उस दानव ने पांडवों के काल के दौरान इस स्थान पर शासन किया था। सन 2011 की जनगणना के अनुसार इस जिले की कुल जनसंख्या 128,730 थी। जिसमें पुरुषों की जनसंख्या 68,316 और महिलाओं की जनसंख्या 60,414 थी।

जिला रेवाड़ी का इतिहास दिल्ली के इतिहास के समकालीन है। महाभारत काल के दौरान रेवट नाम का राजा था, उनकी बेटी थी, जिसका नाम रेवती था। लेकिन राजा प्रेम से रीवा बुलाया करते थे। राजा ने अपनी बेटी के नाम पर "रीवा वाडी" नामक शहर स्थापित किया । सन 2011 में की गई जनगणना के अनुसार रेवाड़ी की कुल जनसंख्या 900,332 थी। जिसमें पुरुषों की

जनसंख्या 474,335 और महिलाओं की 425,997 थी। इस जिले में जनसंख्या वृद्धि 3.55 प्रतिशत है। यहां का जनसंख्या धनत्व 565 प्रति व्यक्ति किलोमीटर है।

निपटान पैटर्न

मानव बस्ती में किसी भी प्रकार और प्रकार के घर सम्मिलित होते है, जिसमें मनुष्य रहते है। स्थायी रूप से हुए स्थान को मानव बस्ती कहते है। मकानों का स्वरूप बदला जा सकता है, उनके कार्य बदल सकते हैं परंतु बस्तियाँ समय एवं स्थान के साथ निरंतर बसती रहेंगी। कुछ बस्तियाँ अस्थायी हो सकती हैं जिसमें निवास कुछ ही समय जैसे कि एक ऋतु के लिए होता है। मानव मकानों के समूह में रहते हैं। इसे ग्राम, नगर या एक शहर कह सकते हैं, यह सभी मानव बस्ती के उदाहरण हैं। बस्तियों संहत बस्ती, प्रकीर्ण बस्ती, ग्रामीण बस्ती, ग्रामीण बस्ती, नगरीय बस्ती, इत्यादि के रूप में होतो है। मैदानी ग्राम, पठारी ग्राम, पठारी ग्राम, तटीय ग्राम, वन ग्राम मरुस्थलीय ग्राम विन्यास के आधार पर बस्तियों के प्रकार है।

कार्य के आधार परकृषि ग्राम, मछुवारों के ग्राम, लकड़हारों के ग्राम, पशुपालक ग्राम के आधार पर बस्तियों को वगीकृत किया जा सकता है। इसमें कइ प्रकार की ज्यामितिक आकृतियाँ हो सकती हैं जैसे कि रेखीय, आयताकार, वृत्ताकार, तारे के आकार की, 'टी' के आकार की, चौक पट्टी, दोहरे ग्राम इत्यादि।

ग्रामीण बस्तियों के प्रकार

ग्रामीण बस्तियों के निम्न प्रकार होते हैं–

गुच्छित बस्तियाँ

गुच्छित ग्रामीण बस्ती घरों का एक संहत अथवा संकुलित रूप से निर्मित क्षेत्र होता है।

अर्ध–गुच्छित बस्तियाँ

अर्ध–गुच्छित अथवा विखंडित बस्तियाँ परिक्षिप्त बस्ती के किसी सीमित क्षेत्र में गुच्छित होने की प्रवृत्ति का परिणाम है।

पल्ली बस्तियाँ

कई बार बस्ती भौतिक रूप से एक–दूसरे स पृथक् अनेक इकाइयों में बँट जाती है किंतु उन सबका नाम एक रहता है।

परिक्षिप्त बस्तियाँ

भारत में परिक्षिप्त अथवा एकाकी बस्ती प्रारूप सुदूर जंगलों में एकाकी झोंपडियां अथवा कुछ झोंपडियों की पल्ली अथवा छोटी पहाड़ियों की ढालों पर खेतों अथवा चरागाहों के रूप में दिखाई पड़ता है।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

नगरीय बस्ती

तीव्र नगरीय विकास एक नूतन परिघटना है। कुछ समय पूर्व तक बहुत ही कम बस्तियाँ कुछ हजार से अधिक निवासियों वाली थी।

नगरीय बस्तियों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

व्यावसायिक संरचना के आधार पर

प्रशासन के आधार पर

स्थिति के आधार

नगरों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण

प्रत्येक शहर अनेक प्रकार्य करता है। प्रमुख अथवा विशेषीकृत प्रकार्यों के आधार पर भारतीय नगरों को मोटे तौर पर निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है –

उच्चतर क्रम के प्रशासनिक मुख्यालयों वाले शहरों को **प्रशासन नगर** कहते हैं, जैसे कि चंडीगढ़, नई दिल्ली, भोपाल, शिलांग, गुवाहाटी, इंफाल, श्रीनगर, गांधी नगर, जयपुर, चेन्नई इत्यादि।मुंबई, सेलम, कोयंबटूर, मोदीनगर, जमशेदपुर, हुगली, भिलाई इत्यादि के विकास का प्रमुख अभिप्रेरक बल उद्योगों का विकास रहा है, इस प्रकार के नगर **औद्योगिक नगर** कहलाते हैं।

पत्तन नगर जो मुख्यतः आयात और निर्यात कार्यों में संलग्न रहते हैं, जैसे– कांडला, कोच्चि, कोझीकोड, विशाखापट्नम, इत्यादि अथवा आंतरिक परिवहन की धुरियाँ जैसे धुलिया, मुगलसराय, इटारसी, कटनी इत्यादि। इन्हें **परिवहन नगर** के नाम से जाना जाता है।**व्यापार और वाणिज्य** में विशिष्टता प्राप्त शहरों और नगरों को इस वर्ग में रखा जाता है। कोलकाता, सहारनपुर, सतना इत्यादि कुछ उदाहरण हैं।

जो नगर खनिज समृद्ध क्षेत्रों में विकसित हुए हैं जैसे रानीगंज, झरिया, डिगबोई, अंकलेश्वर, सिंगरौली इत्यादि। वे **खनन नगर** के नाम से जाने जाते हैं।जिने नगरों का उदय गैरिसन नगरों के रूप में हुआ है, जैसे अंबाला, जालंधर, महू, बबीना, उधमपुर इत्यादि। वे **गरिसन (छावनी) नगर** कहलाते हैं।

वाराणसी, मथुरा, अमृतसर, मदुरै, पुरी, अजमेर, पुष्कर, तिरुपति, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, उज्जैन अपने धार्मिक/सांस्कृतिक महत्त्व के कारण प्रसिद्ध हुए। इन्हें **धार्मिक और सांस्कृतिक नगर**कहते हैं।मुख्य परिसर नगरों में से कुछ नगर शिक्षा केंद्रों के रूप में विकसित हुए जैसे रुड़की, वाराणसी, अलीगढ़, पिलानी, इलाहाबाद। इन्हें **शैक्षिक नगर** कहा जाता है।

दक्षिण हरियाणा में नगरीय बस्तियों की समस्याएं

© Associated Asia Research Foundation (AARF)

दक्षिण हरियाणा में जैसे–जैसे औद्योगीकरण हुआ है, वैसे–वैसे यहां के नगरों की समस्याएं भी बढ़ी है।**आवास समस्या**अत्यंत गंभीर बन गयी है। भूमि का मूल्य भी इन आकाश छूता है।सामान्य व्यक्ति भूमि क्रय करके नगर में मकान नहीं बना सकता है ।नगर में किराये के मकान भी समान्य व्यक्ति नहीं ले सकता है।लाखों श्रमिकों जिसके साधन और आय सीमित हैं उसे विवश होकर गंदी बस्तियो में रहना पड़ता है।मकान कम है और रहने वाले व्यक्ति कहीं अधिक हैं और परिणामस्वरूप गंदी बस्तियों में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है

नगरीय जनसंख्या का दबाव बढ़ती जनसंख्या के साथ जमीन तो बढ़ी नहीं फलस्वरूप रोजगार की खोज में लोग गांव से यहां की तरफ भाग रहे हैं ।जहां उन्हें राहत के स्थान पर तमाम तकलीफों का सामना करना पड़ता है।

शिक्षा और जागरूकता के अभाव में गंदी बस्तियों के विकास में वृधि हुई है ।वे व्यक्ति जो निर्धनता के शिकार हैं, वे गंदी बस्तियों की गंदगी से भी अनभिज्ञ हैं ।जहां सुविधाएं नाम को भी नहीं है और बीमारियों और सामाजिक बुराइयां असीमित फिर भी यहां इसलिए आतें हैं क्योंकि उन्हें नाम मात्र का किराया देना पड़ता है ।

कुछ तेजी में अनाधिकृत बस्तियां बन जाती है जिससे **नगर नियोजन प्रभावित** होता है। मलिन बस्तियों में अधिकतर गरीब और श्रमिक परिवार रहते हैं। जिनकी आय बहुत ही कम होती है, जिससे उन्हें अपना जीवन यापन करना कठिन होता है, जिसके कारण इन परिवारों के बच्चे कुपोषण का शिकार हो जाते हैं।

दक्षिण हरियाणा की ग्रामीण बस्तियों की समस्याएं

दक्षिण हरियाणा के कुछ ग्रामीण बस्तियों में जल की आपूर्ति भी पर्याप्त की समस्या का समाना करना पड़ता है। कई स्थानों पर भू–जल पीने योग्य नहीं है। यदि इस प्रकार के जल का उपयोग पेय जल के रूप में किया जाता है, तो जल जनित बीमारियाँ जैसे हैजा, पीलिया आदि सामान्य समस्या उत्पन्न हो सकती है। कई स्थानों पर सिंचाई सुविधाएँ कम होने से कृषि कार्य पर भी प्रभाव पड़ता है।कूड़ा–कचरा निस्तारण की सुविधाएँ नगण्य हैं। जिससे इन क्षेत्रों में स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएँ रहती हैं।

मकानों की रूपरेखा एवं उनके लिए प्रयुक्त होने वाली गृहनिर्माण सामग्री हर पारिस्थितिक प्रदेश में भिन्न होती है। जो मकान मिट्टी, लकड़ी एवं छप्पर के बनाए जाते हैं उन्हें भारी वर्षा एवं बाढ़ के समय काफी नुकसान पहुँचता है एवं हर वर्ष उनके उचित रख–रखाव की आवश्यकता पड़ती है। अधिकतर मकानों की रूपरेखा भी ऐसी होती है जिसमें उपयुक्त संवातन नहीं होता है। एक ही मकान में मनुष्यों के साथ पशु भी रहते हैं। इसी मकान में पशु शेड और उनके चारा रखने की जगह भी होती है। ऐसा इसलिए किया जाता है कि जंगली जानवरों से पालतू पशुओं और द्य उनके चारे की रक्षा उचित ढंग से हो सके।

विशाल ग्रामीण जनसंख्या को स्वास्थ्य एवं शिक्षा संबंधी उपयुक्त सुविधाएं प्रदान करवा माना अत्यंत कठिन है। वैसे दक्षिण हरियाणा में देश के अन्य भागों की तुलना में इस समस्या की गंभीरता कम है। लगभग अधिकतर गांवों बारहवीं तक के स्कूल है। कई गांवों तथा कस्वों में पब्लिक तथा प्राइवेट स्कूल भी है। एनसीआर का हिस्सा होने के कारण स्वास्थ्य तथा शिक्षा देश के अन्य भागों की तुलना में काफी बेहतर है। हालांकि अधिकतर गांवों में सरकारी स्वास्थ्य केंद्र

नहीं है और जहां हैं, वहां उनमें सुविधाओं का अभाव है। ग्रामीण जनसंख्या अभी चिकित्सा सुविधा के लिए झोपा–छाप डॉक्टरों के परामर्श पर निर्भर है। बेहतर चिकित्सा सुविधा वाले अस्पताल गांवों से कोसो दूर हैं। कई गांवों में इलाज के लिए अब भी टोना–टोटका या झाड़फूंक का प्रयोग किया जा रहा है। आधुनिक शिक्षा के प्रसार के बावजूद भी दक्षिण हरियाणा के गांवों में लोगों का अब भी झाड़फूंक में विश्वास बना हुआ है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

दक्षिण औधोगिकीकरण और नगरीकरण व्यक्ति की शिक्षा, विज्ञान, तकनीकी ज्ञान के विकास में सहायक सिद्ध हुआ है, परन्तु इनके साथ–साथ इतने करोड़ों व्यक्तियों को एक कठिन जीवन जीने के लिए मजबूर भी किया गया है । औधोगिकीकरण एवं नगरीकरण के फलस्वरूप लोग अपनी आर्थिक उन्नति के लिए गांवों से आकार शहरों में बसे। आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण अधिकांश व्यक्ति शहर आने के बाद गंदी बस्तियों में रहने को विवश हो गए हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि शहरों पर जनसंख्या के बढ़ते दबाव ने गंदी बस्तियों को जन्म दिया है।

दक्षिण हरियाणा के कुछ ग्रामीण बस्तियों में जल की आपूर्ति भी पर्याप्त की समस्या का समाना करना पड़ता है। कई स्थानों पर पीने योग्य भू–जल न होने के कारण लोगों जल जनित बीमारियाँ जैसे हैजा, पीलिया आदि सामान्य समस्या उत्पन्न हो सकती है। कई स्थानों पर सिंचाई सुविधाएँ कम होने से कृषि कार्य पर भी प्रभाव पड़ता है।कूड़ा–कचरा निस्तारण की सुविधाएँ नगण्य हैं। जिससे इन क्षेत्रों में स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएँ रहती हैं।

संदर्भ

1. कुमार, संजय, हरियाणा, सामान्य ज्ञान, (2015), अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड, मेरठ,

2. भारद्वाज, ओ.पी., हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, (1978), भाषा विभाग, हरियाणा सरकार, प्रथम संस्करण।

3. डॉ. भारद्वाज, विष्णुदत्त, हरियाणा की लोकसंस्कृति, (1996), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

4. सिंह, वीरेन्द्र, हरियाणा विस्तृत अध्ययन, (2008), अरिहन्त पब्लिकेशन्स, मेरठ, उत्तर–प्रदेश।

5. कादयान, ओम प्रकाश, हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर, (2003), गुरु जंभेश्वर प्रकाशन, हरियाणा।

9. शर्मा, विश्वबंधु, हरियाणा भाषा रू स्वरूप और पहचान, (2006), अनंग प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण।

10. निर्माण, पूजा, भारत के हिन्दी राज्य–हरियाणा, (2008), महक साहित्य संसार, दिल्ली।

11. यादव, के.सी., 1857– द रोल ऑफ पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश, नेशनल बुक ट्रस्ट (2008), इंडिया।

12. शंकर, आकाशदीप, अनु. भारत के राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश, 2005, पेंगुइन बुक्स इण्डिया, नई दिल्ली, हिन्दी का प्रथम संस्करण, पृ.सं. 53।

13. गुप्ता, आर.एन., हरियाणा सामान्य ज्ञान, (2003), रानी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

14. जयप्रकाश, हरियाणा लोक साहित्य का सामाजिक अध्ययन, (2008), हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला।

15. शर्मा, एस.के., संपादक, हरियाणा, पास्ट एण्ड प्रेजेंट, (2005), वॉल्यूम–1, मित्तल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

16. भूथालिंगम, एस., टैक्नो–इकोनोमिक सर्वे ऑफ हरियाणा, (1970), नेशनल काउंसिल ऑफ अप्लाइड इकॉनोमिक रिसर्च, नई दिल्ली,

17. गुप्ता, एल.सी. एवं गुप्ता, एम.सी., हरियाणा ऑन मॉडर्ननाइजेशन, (2000), एक्सेल बुक्स, नई दिल्ली।

18. प्रभाकर, देवीशंकर, हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, (1967), उमेश प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण।

19. डॉ. बुद्ध प्रकाश, हरियाणा का इतिहास : एक सर्वेक्षण, (1981), हरियाणा, साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण।

20. जाखड़, राम सिंह, 1857 की जनक्रान्ति में हरियाणा का योगदान, (1999), अभिलेखागार विभाग, हरियाणा।

21. गुप्ता, आर., हरियाणा सामान्य ज्ञान (2016), रमेश पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली